

भारत में मुद्रास्फीति: मांग बनाम आपूर्ति

प्रलिस के लयि:

[मुद्रास्फीति](#), [उपभोक्ता मूल्य सूचकांक \(CPI\) हेडलाइन मुद्रास्फीति](#), [कोवडि-19](#), [महामारी](#), [रूस-यूक्रेन संघर्ष](#), [लॉकडाउन](#), [अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष](#), [मांगजनति मुद्रास्फीति](#), [लागत जनति मुद्रास्फीति](#)

मेन्स के लयि:

मुद्रास्फीतिपर मांग और आपूर्तिका प्रभाव ।

[स्रोत: द हट्टि](#)

चर्चा में क्यों?

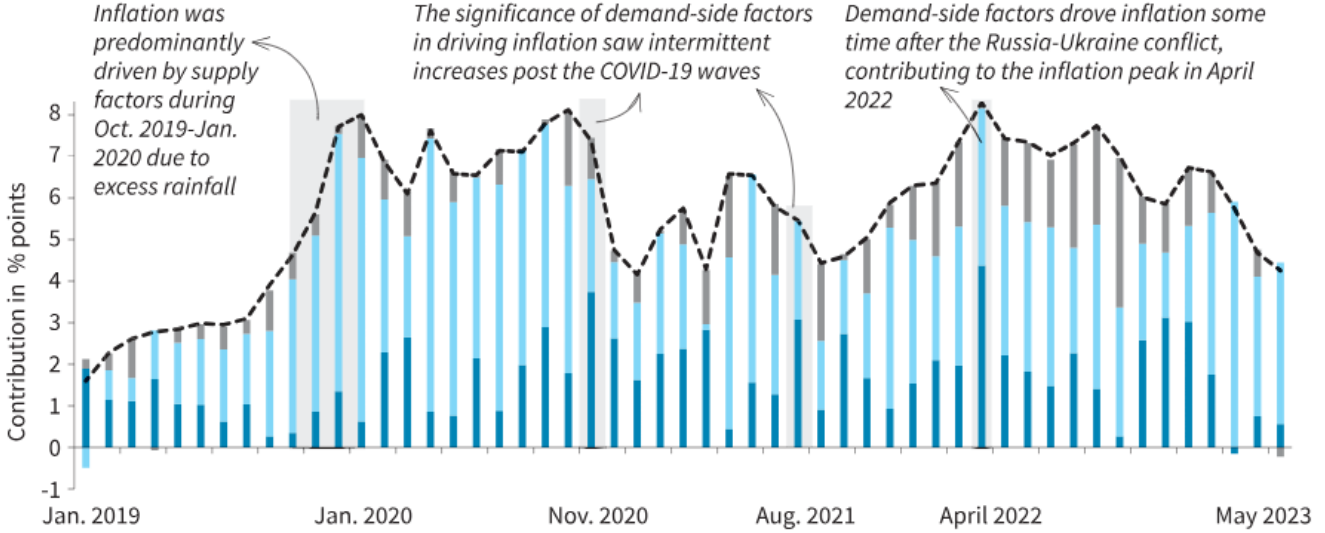
भारत की हालिया [मुद्रास्फीति](#) दर चर्चा का एक वषिय है, लेकिन [भारतीय रज़िर्व बैंक \(RBI\)](#) की हालिया अवलोकन से आपूर्ति और मांग दोनों कारकों से प्रभावति होने वाली बाज़ार की बदलती प्रवृत्तिके संकेत मलिते हैं ।

- जनवरी 2019 से मई 2023 तक की पूरी अवधिमें [उपभोक्ता मूल्य सूचकांक \(CPI\) हेडलाइन मुद्रास्फीति](#) का लगभग 55%, आपूर्ति-पक्ष से संबंधति कारकों के लयि ज़मिमेदार है जबकि मुद्रास्फीतिमें मांग चालकों का योगदान 31% था ।

हाल के वर्षों में भारत में मुद्रास्फीतिकी क्या कारण है?

- [कोवडि-19](#) की दोनों लहरों के दौरा आपूर्तिमें व्यवधान मुद्रास्फीतिकी मुख्य कारण था ।
 - [महामारी](#) की शुरुआत, [लॉकडाउन](#) के कारण उत्पादन और मांग में कमी से आर्थिक विकास में भारी गरिावट आई ।
 - इस चरण में कम मांग के कारण [कमोडिटी की कीमतों](#) में भी कमी देखी गई ।
 - टीकों के वतिरण और नयित्तरति मांग जारी होने के साथ अर्थव्यवस्था में पुनः सुधार हुआ, आपूर्तिकी तुलना में मांग में तेज़ी से वृद्धि हुई । इस असंतुलन के परिणामस्वरूप कमोडिटी/वस्तुओं की कीमतों पर दबाव बढ़ गया ।
- वर्ष 2022 में [रूस-यूक्रेन संघर्ष](#) की शुरुआत ने आपूर्ति शृंखला चुनौतियों को और बढ़ा दिया तथा [कमोडिटी](#) की कीमतों पर दबाव डाला ।

Supply factors Demand factors Ambiguous factors - - - - CPI Inflation



मुद्रास्फीति के कारणों का आकलन करने की पद्धत क्या है?

- एक महीने के भीतर कीमतों और वस्तु की मात्रा (prices and quantities) में अप्रत्याशति बदलाव यह नरिधारति करते हैं कि **मुद्रास्फीति** मांगजनति (जब कीमतें और मात्राएँ समानुपाती होती हैं) या आपूर्तजनति (जब कीमतें और मात्राएँ व्युत्करमानुपाती होती हैं) है।
 - मांग (demand) में वृद्धिसे कीमतों और मात्रा दोनों में वृद्धि होती है जबकि मांग में कमी से दोनों में कमी आती है।
 - यदि कीमतों और मात्राओं में अप्रत्याशति परिवर्तन होता है जो एक-दूसरे के विपरीत बढ़ते हैं, तो मुद्रास्फीति को आपूर्त-प्रेरति माना जाता है। आपूर्ति में कमी कम मात्रा लेकिन कीमत में वृद्धि से संबंधित है।
- समग्र हेडलाइन मुद्रास्फीति (overall headline inflation) का आकलन करने के लिये उप-समूह स्तर पर मांग और आपूर्ति कारकों को उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (Consumer price index- CPI) का उपयोग करके जोड़ा गया था।
- हेडलाइन मुद्रास्फीति, अर्थव्यवस्था की कुल मुद्रास्फीति की माप है, जिसमें खाद्य एवं ऊर्जा की कीमतें इत्यादि शामिल हैं, जो अधिक अस्थिर (volatile) होती हैं और इनसे मुद्रास्फीति के बढ़ने की संभावना होती है।
 - उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (Consumer Price Index- CPI), जो यह नरिधारति करता है कि वस्तुओं की एक नश्चिति टोकरी (basket of goods) खरीदने की लागत की गणना करके पूरी अर्थव्यवस्था में कतिनी मुद्रास्फीति हुई है, इसका उपयोग हेडलाइन मुद्रास्फीति के आँकड़े ज्ञात करने के लिये किया जाता है।

मुद्रास्फीति क्या है?

- परिचय:
 - अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (International Monetary Fund- IMF) द्वारा परिभाषित मुद्रास्फीति, एक नश्चिति अवधि में कीमतों में वृद्धि की दर है, जिसमें समग्र मूल्य वृद्धि या वशिष्ट वस्तुओं और सेवाओं की व्यापक माप शामिल है।
 - यह जीवन यापन की बढ़ती लागत को दर्शाता है और इंगति करता है कि एक नरिदृष्टि अवधि, आमतौर पर एक वर्ष में, वस्तुओं और/या सेवाओं की लागत का एक समुच्चय कतिना महँगा हो गया है।
 - आर्थिक असमानताओं और बड़ी आबादी के कारण भारत में मुद्रास्फीति का प्रभाव विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है।
- मुद्रास्फीति के विभिन्न कारण:
 - मांगजनति मुद्रास्फीति (Demand Pull Inflation):
 - मांगजनति मुद्रास्फीति (Demand Pull Inflation) तब होती है जब वस्तुओं और सेवाओं की मांग उनकी आपूर्ति से अधिक हो जाती है। जब अर्थव्यवस्था में समग्र मांग अधिक होती है, तो उपभोक्ता उपलब्ध वस्तुओं तथा सेवाओं के लिये अधिक भुगतान करने को तैयार होते हैं, जिससे कीमतों में सामान्य वृद्धि होती है।
 - उच्च उपभोक्ता व्यय वाली एक उभरती अर्थव्यवस्था अतिरिक्त मांग उत्पन्न कर सकती है, जिससे कीमतों पर दबाव बढ़ सकता है।
 - लागतजनति मुद्रास्फीति:
 - लागतजनति मुद्रास्फीति (Cost-Push inflation) वस्तुओं तथा सेवाओं की उत्पादन लागत में वृद्धि से प्रेरित होती है। यह बढी हुई आय, कच्चे माल की बढी हुई लागत अथवा आपूर्ति शृंखला में व्यवधान जैसे कारकों के कारण हो सकता है।
 - अंतरनिहित अथवा वेतन-मूल्य मुद्रास्फीति:
 - इस प्रकार की मुद्रास्फीति को अमूमन मज़दूरी तथा कीमतों के बीच फीडबैक लूप के रूप में वर्णित किया जाता है। जब श्रमिक अधिक वेतन की मांग करते हैं तो व्यवसाय बढी हुई श्रम लागत की पूर्ति करने के लिये कीमतें बढ़ा सकते हैं। यह

श्रमकों को अधिक वेतन की मांग करने के लिये प्रेरित करता है तथा यह चक्र जारी रहता है।

- श्रमकी संघों द्वारा सामूहिक सौदेबाज़ी के परिणामस्वरूप उच्च मज़दूरी दर प्राप्त हो सकती है, जिससे उत्पादन लागत में वृद्धि हो सकती है तथा बाद में वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमतें बढ़ सकती हैं।

मुद्रास्फीति और इससे संबंधित पद

मुद्रास्फीति

वस्तुओं/सेवाओं की कीमतों में वृद्धि; क्रय शक्ति में तदनुसार गिरावट

- **रेंगती हुई मुद्रास्फीति (Creeping Inflation)**: हल्की/मध्यम मुद्रास्फीति जहाँ मूल्य स्तर, एक निश्चित अवधि में लगातार कम दर (एकल अंकीय मुद्रास्फीति दर) पर बढ़ता है।
- **कूदती हुई मुद्रास्फीति (Galloping Inflation)**: यह तब होती है जब निम्न मुद्रास्फीति को नियंत्रित नहीं किया जाता है (मुद्रास्फीति दोहरे/तिहरे अंकों में - 20/100/200% वार्षिक)
- **अति मुद्रास्फीति (Hyperinflation)**: कीमतें सालाना मिलियन या यहाँ तक कि एक ट्रिलियन प्रतिशत तक बढ़ जाती हैं (1920 के दशक में जर्मनी में देखी गई)

कोर मुद्रास्फीति

वस्तुओं/सेवाओं की कीमत में परिवर्तन लेकिन खाद्य/ऊर्जा क्षेत्रों को छोड़कर (कीमतों में अस्थिरता के कारण)

हेडलाइन मुद्रास्फीति

टोकरी में सभी वस्तुओं के मूल्य में परिवर्तन (खाद्य और ऊर्जा सहित)

कोर = हेडलाइन - खाद्य एवं ईंधन सामग्री

स्टैगफ्लेशन

जब मुद्रास्फीति, बेरोज़गारी और आर्थिक स्थिरता/मंदी एक साथ होती है; इस प्रकार की मुद्रास्फीति का प्रबंधन करना सबसे कठिन होता है

- 1970 के दशक (अमेरिका, ब्रिटेन) में विकसित देशों द्वारा इस स्थिति का सामना किया गया जब विश्व में तेल की कीमतें नाटकीय रूप से बढ़ीं

अपस्फीति

मुद्रास्फीति का प्रतिलौम - वस्तुओं/सेवाओं की कीमत में निरंतर गिरावट

- यहाँ, वार्षिक मुद्रास्फीति दर 0% से नीचे गिर जाती है जिसके परिणामस्वरूप मुद्रा के वास्तविक मूल्य में वृद्धि होती है (जापान को 1990 के दशक में लगभग एक दशक तक इसका सामना करना पड़ा)
- यह मंदी/अवसाद में तब्दील हो सकता है, इसलिए यह मुद्रास्फीति से भी अधिक खतरनाक है

अवस्फीति

जब मुद्रास्फीति की दर कम हो जाती है

- इसका तात्पर्य यह है कि कीमतें प्रत्येक महीने के साथ धीमी गति से बढ़ रही हैं (मुद्रास्फीति हो रही है)

अपस्फीति कीमतों में गिरावट है, जबकि अवस्फीति मुद्रास्फीति दर में गिरावट है



मुद्रा संस्फीति

आमतौर पर अपस्फीति का अनुसरण होता है

- नीति निर्माता मुद्रास्फीति (अधिक सरकारी खर्च, कम ब्याज दरें आदि) उत्पन्न करके आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने का प्रयास करते हैं।

स्वयूप्लेशन

इस स्थिति में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में मुद्रास्फीति की विषमता देखने को मिलती है; कुछ क्षेत्रों को भारी मुद्रास्फीति का सामना करना पड़ता है, जबकि कुछ क्षेत्रों में मुद्रास्फीति की अनुपस्थिति देखने को मिलती है और कुछ क्षेत्रों को अपस्फीति का भी सामना करना पड़ रहा है

ग्रीडफ्लेशन

वह स्थिति जहाँ (कॉर्पोरेट) लालच मुद्रास्फीति को बढ़ावा देता है; कंपनियाँ लाभ को अधिकतम करने के लिए लागत से परे अपनी कीमतें बढ़ाती हैं

श्रृंकप्लेशन

यह छिपी हुई मुद्रास्फीति का एक रूप है। इससे अक्सर ग्राहकों को निराशा/असंतोष होता है

- श्रृंकप्लेशन किसी उत्पाद के रिटर्न मूल्य को बनाए रखते हुए उसके आकार को कम करने की पद्धति है।



UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष प्रश्न

?????????:

प्रश्न. भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में मांग-प्रेरित मुद्रास्फीति तथा उसमें वृद्धि निम्नलिखित कनि कारणों से होती है? (2021)

1. वसितारति नीतियाँ
2. राजकोषीय प्रोत्साहन
3. मुद्रास्फीति सूचकांकन मज़दूरी
4. उच्च क्रय शक्ति

5. बढ़ती ब्याज़ दर

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

- (a) केवल 1, 2 और 4
- (b) केवल 3, 4 और 5
- (c) केवल 1, 2, 3 और 5
- (d) 1, 2, 3, 4 और 5

उत्तर: (a)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/inflation-in-india-demand-vs-supply>

